शोध दिशा

ISSN 0975-735X

विश्वस्तरीय शोध-पत्रिका

UGC APPROVED CARE LISTED JOURNAL

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त शोध पत्रिका

शोध अंक 54/2 अप्रैल-जून 2021 300.00 रुपए

संपादकीय कार्यालय
हिंदी साहित्य निकेतन, 16 साहित्य विहार,
बिजनौर 246701 (उ०प्र०)
फोन : 01342-263232, 09557746346
ई-मेल : shodhdisha@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com

क्षेत्रीय कार्यालय

हरियाणा
डॉ० मीना अग्रवाल
ए-402, पार्क व्यू सिटी-2 सोहना रोड,
गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन : 0124-4076565, 07838090237

दिल्ली एन०सी०आर०
डॉ० अनुभूति
सी-106, शिवकला अपार्टमेंट्स
बी 9/11, सेक्टर 62, नोएडा
फोन : 09958070700

(सभी पद मानद एवं अवैतनिक हैं।)

संपादक
डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल
07838090732

प्रबंध संपादक
डॉ० मीना अग्रवाल

संयुक्त संपादक
डॉ० शंकर क्षेम

उपसंपादक
डॉ० अशोककुमार
डॉ० कनुप्रिया प्रचण्डिया

कला संपादक
गीतिका गोयल/ डॉ० अनुभूति

विधि परामर्शदाता
अनिलकुमार जैन, एडवोकेट

आर्थिक परामर्शदाता
ज्योतिकुमार अग्रवाल, सी०ए०

शुल्क
आजीवन (दस वर्ष): व्यक्तिगत : पाँच हजार रुपए
संस्थागत : छह हजार रुपए
वार्षिक शुल्क : आठ सौ रुपए
यह प्रति : तीन सौ रुपए

प्रकाशित सामग्री से संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है। पत्रिका से संबंधित सभी विवाद केवल बिजनौर स्थित न्यायालय के अधीन होंगे। शुल्क की राशि 'शोध दिशा' बिजनौर के नाम भेजें। (सन् 1989 से प्रकाशन-क्षेत्र में सक्रिय)

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा श्री लक्ष्मी ऑफसैट प्रिंटर्स, बिजनौर 246701 से मुद्रित एवं 16 साहित्य विहार, बिजनौर (उ०प्र०) से प्रकाशित। पंजीयन संख्या : UP HIN 2008/25034

संपादक : डॉ० गिरिराजशरण अग्रवाल

निरुपमा बरगोहाई और मृदुला गर्ग के उपन्यासों में नारीवाद/ **सुमि शर्मा** 132
नरेंद्र कोहली एवं उनकी साहित्य-साधना/ **प्रतिभा** 139
असम की राभा जनजाति : एक अवलोकन/ **डॉ॰ राजकुमारी दास** 151
आधारभूत संरचना के विकास में बजट 2021 का योगदान/ **डॉ॰ राजेंद्र कुमार** 155
मानवाधिकार का अर्थ एवं महत्त्व/ **पूजा कुमारी** 161
मार्कण्डेय की कहानियों में ग्रामीण स्त्री का संघर्ष/ **डॉ॰ बिजेन्द्र कुमार** 165
ज्ञानप्रकाश विवेक के साहित्य में आधुनिक युगबोध/
नीरू रानी, डॉ॰ कामराज सिंधु 171
बालश्रम और कानूनी अधिकार/ **वंदना** 174
बौद्ध पालि साहित्य में वर्णित महात्मा बुद्ध का कृषिविषयक दृष्टिकोण/
डॉ॰ प्रशांत कुमार, डॉ॰ अजीत कुमार राव 177
मानवीय चेतना पर दस्तक देते कुसुम अंसल के नारीपात्र/
डॉ॰ विक्रम सिंह, डॉ॰ सुनीता 183
धरती से जुड़े कवि : भगवतीलाल व्यास/ **डॉ॰ नीतू परिहार** 187
अलका सरावगी के कथासाहित्य में सामाजिक परिदृश्य/ **दिनेशचंद्र भट्ट** 192
परिसर बादशाहीथौल टिहरी परिसर, गढ़वाल/ **प्रो॰ कुसुम डोभाल मिश्र** 192
प्रसाद के नाटकों के पात्रों में अंतर्द्वंद्व/ **डॉ॰ वीना सोनी** 196
कोविड-19 के दौरान ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की चुनौतियाँ एवं समाधान/
अशोक कुमार, डॉ॰ सुधीर मलिक 202
लघुकथाओं का सुंदर गुलदस्ता : आस्था के फूल/ **प्रो॰ नीरू** 206
मुरैना के ककनमठ मंदिर में अंकित दिक्पाल देवता इंद्र का प्रतिमाशास्त्रीय स्वरूप/
गौरव सिंह, प्रो॰ प्रभात कुमार 211
श्रीकृष्णचंद्रिका : एक अद्भुत रचना/ **डॉ॰ निर्भय शर्मा** 216
संत कबीर का समाजदर्शन/ **डॉ॰ लक्ष्मी गुप्ता** 221
भारतीय धर्म (संस्कृति) और अंबेडकर की दृष्टि/ **उमेश कुमार** 227
कोरोना महामारी के परिप्रेक्ष्य में संत कबीर के समाज सुधारक रूप की उपादेयता/
डॉ॰ नवनाथ गाड़ेकर/
समकालीन हिंदी कविता में अंबेडकरवादी चिंतन, **डॉ॰ संजय नाईनवाड़** 238
'उर्वशी' काव्य में चित्रित कामाध्यात्म का दर्शन : वर्तमान संदर्भ/ **रमेशचंद सैनी** 244
आचार्य रामचंद्र शुक्ल के मनोविकार संबंधी निबंधों की सामाजिक दृष्टि/
सैफ रजा खान 249
काशी का अस्सी : सारांशिक रूप/ **नेहा गुप्ता** 254
सुनीता जैन द्वारा लिखित उपन्यास 'मरणातीत' : एक विश्लेषण/ **नीलम देवी** 258
मानवीय संवेदनाओं का अभाव : हृदयेश कृत 'हत्या' उपन्यास के विशेष संदर्भ में/
ज्योतिदेवी, डॉ॰ सुधारानी सिंह 263

धरती से जुड़े कवि : भगवतीलाल व्यास

डॉ॰ नीतू परिहार
सहआचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी-विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

भगवतीलाल व्यास मेवाड़ के प्रसिद्ध और जाने-माने कवि हैं। जितना उनके व्यक्तित्व में सादगी है उतना ही सरल उनका लेखन है। विगत चार दशकों से उनका लेखन कार्य सतत जारी है जिसमें गीत, ग़ज़ल, मुक्तक, छंद, मुक्त-छंद सभी में उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति की है। वे अपने आस-पास की बहुरंगी दुनिया की अंतर्छवियों को अपने साहित्य में उकेरते हैं। वे अपने लेखन में मानवीय रिश्तों में आते बदलाव, सामाजिक विषमताओं और घटते जीवन-मूल्यों पर चिंता व्यक्त करते हैं। भगवतीलाल व्यास संवेदनशील कवि हैं। वे हिंदी और राजस्थानी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखते हैं। उनकी कविता को पढ़ते हुए निसंदेह कहा जा सकता है कि उनका कहने का लहजा बहुत विनम्र है, बहुत आत्मीय है। साथ ही यह भी सच है कि वे विनम्रता में बहुत सरस और सुहाती बातें ही नहीं कहते, वे जीवन के कटु यथार्थ से उपजने वाली टीस, मनुष्य के असंगत आचरण और कठिन रास्तों की कशमकश को भी बेबाक कहते हैं।

'शब्दों की धरती है कविता' काव्य-संग्रह की पहली ही कविता ने मुझे पूरे संग्रह को पढ़ने के लिए लालायित कर दिया। कविता पढ़ते हुए मुझे मेरे अराध्य श्रीकृष्ण का स्मरण हो आया। ईश्वर की कृपा इतनी है कि कुछ और माँगने की आवश्यकता नहीं यह मैं सोचती हूँ और यही बात कवि ने कितनी सहृदयता से कही है–

क्या माँगू मैं अपने लिए
रूप, यश, धन
सब कुछ तो तुमने दे दिया है
बिना माँगे ही।[1]

ईश्वर की कृपा सब पर नहीं होती और यह भी सच है कि सब ईश्वर की कृपा का धन्यवाद भी नहीं करते। हममें से अधिकांश ऐसे हैं जो सब-कुछ मिलने पर भी और पाने की चाह रखते हैं। जबकि देनेवाले ईश्वर ने कभी कोई कमी नहीं रखी। उनकी कृपा तो अहर्निश बनी रहती है। कवि अपने प्रभु से कहता है कि माँगना मेरा स्वभाव नहीं, लेकिन मैं यह जानता हूँ कि देना तुम्हारा स्वभाव है। मैं तो बस यही चाहता हूँ कि तुम्हारे इस देने की 'बात' को अपना अधिकार न समझने लगूँ–

तुम्हारे दान को मैं
अपना ही अधिकार

ISSN 0975-735X

धरती से जुड़े कवि : भगवतीलाल व्यास

डॉ॰ नीतू परिहार
सहआचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी-विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

भगवतीलाल व्यास मेवाड़ के प्रसिद्ध और जाने-माने कवि हैं। जितना उनके व्यक्तित्व में सादगी है उतना ही सरल उनका लेखन है। विगत चार दशकों से उनका लेखन कार्य सतत जारी है जिसमें गीत, ग़ज़ल, मुक्तक, छंद, मुक्त-छंद सभी में उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति की है। वे अपने आस-पास की बहुरंगी दुनिया की अंतर्छवियों को अपने साहित्य में उकेरते हैं। वे अपने लेखन में मानवीय रिश्तों में आते बदलाव, सामाजिक विषमताओं और घटते जीवन-मूल्यों पर चिंता व्यक्त करते हैं। भगवतीलाल व्यास संवेदनशील कवि हैं। वे हिंदी और राजस्थानी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखते हैं। उनकी कविता को पढ़ते हुए निसंदेह कहा जा सकता है कि उनका कहने का लहजा बहुत विनम्र है, बहुत आत्मीय है। साथ ही यह भी सच है कि वे विनम्रता में बहुत सरस और सुहाती बातें ही नहीं कहते, वे जीवन के कटु यथार्थ से उपजने वाली टीस, मनुष्य के असंगत आचरण और कठिन रास्तों की कशमकश को भी बेबाक कहते हैं।

'शब्दों की धरती है कविता' काव्य-संग्रह की पहली ही कविता ने मुझे पूरे संग्रह को पढ़ने के लिए लालायित कर दिया। कविता पढ़ते हुए मुझे मेरे अराध्य श्रीकृष्ण का स्मरण हो आया। ईश्वर की कृपा इतनी है कि कुछ और माँगने की आवश्यकता नहीं यह मैं सोचती हूँ और यही बात कवि ने कितनी सहृदयता से कही है–

क्या माँगू मैं अपने लिए
रूप, यश, धन
सब कुछ तो तुमने दे दिया है
बिना माँगे ही।[1]

ईश्वर की कृपा सब पर नहीं होती और यह भी सच है कि सब ईश्वर की कृपा का धन्यवाद भी नहीं करते। हममें से अधिकांश ऐसे हैं जो सब-कुछ मिलने पर भी और पाने की चाह रखते हैं। जबकि देनेवाले ईश्वर ने कभी कोई कमी नहीं रखी। उनकी कृपा तो अहर्निश बनी रहती है। कवि अपने प्रभु से कहता है कि माँगना मेरा स्वभाव नहीं, लेकिन मैं यह जानता हूँ कि देना तुम्हारा स्वभाव है। मैं तो बस यही चाहता हूँ कि तुम्हारे इस देने की 'बात' को अपना अधिकार न समझने लगूँ–

तुम्हारे दान को मैं
अपना ही अधिकार

न मान बैठूँ कहीं
बस, मुझसे यह
सुमति मत छीनना
फिर भले तुम कुछ देना
या न देना।[2]

ईश्वर से सुमति माँगने वाले कम ही बचे हैं इस धरती पर। सबको धन, यश की ही कामना अधिक है। व्यास जी की कविता के विषय ईश्वर से लेकर धरती के लगभग सभी बिंदुओं पर हैं। कवि को पकृति से विशेष प्रेम है। वे जंगल, पहाड़, पेड़, नदी, पानी को अपनी कविता में स्थान देते हैं। प्राकृतिक वातावरण उनको मोहित करता है लेकिन जब उसे नष्ट होते देखते हैं तो मन में टीस उठती है। अपने बचपन को याद करते हैं, बचपन की यादों को याद करते हैं। अपने पिता के साथ बिताए दिन याद करते हैं। उनका मानना है कि प्राकृतिक सुंदरता को देखना आँखों को सदा ही अच्छा लगता है। फिर चाहे वे जंगल हो, पहाड़ हों, फूल-पत्ते हों या नदी-झरने। किंतु बढ़ती जनसंख्या और घटते जंगल चिंता का विषय हैं। पिछले कुछ सालों में हमने माँ प्रकृति का बहुत विनाश किया है। बढ़ते प्लास्टिक का प्रयोग निरंतर प्रकृति का दोहन प्रकृति को नष्ट करने के लिए काफी है। भगवतीलाल व्यास अपनी कविताओं में पर्यावरण के लिए बहुत चिंतित हैं। वे याद करते हैं उस समय को जब उनके पिताजी उन्हें पहाड़ दिखाने उदयपुर लाए थे और वे सोच रहे थे–

पहाड़ भी कोई
देखने की चीज होती है?
उसका मन सवाल
करता था–
पर उससे कोई
जवाब देते नहीं बनता।[3]

लेकिन रेल की खिड़की से सिर टिकाकर पहाड़ देखना अच्छा लगता है। पहाड़ कभी अचंभित करते हैं तो कभी अविश्वसनीय लगते हैं। उनकी विराटता, विशालता आश्चर्यचकित करती है। बदलते समय ने पहाड़ों को भी छोटा कर दिया, बल्कि काट-छाँटकर उनका अस्तित्व ही मिटाने का प्रयास चल रहा है। पहाड़ों को काटकर इमारतें बना दी गई हैं। पेड़ों के जंगल के बजाए इमारतों के जंगल दिखाई देते हैं। जिन पहाड़ों पर हरियाली थी, जहाँ पशु-पक्षी विचरते थे अब वहाँ कब्जा है लोहे के सरियों का। कई-कई मंजिलों के फ्लैट्स हैं, रिसोर्ट उग आए हैं उन पहाड़ों पर। पहाड़ों को नोचा गया, छीला गया, बड़ी-बड़ी इमारतों के निर्माण के लिए। अब सच में मन पहाड़ देखने को करता है, पर वे दिखाई नहीं पड़ते–

सचमुच पहाड़ कहीं नहीं दिखते
इमारतें कितनी भी
मंजिलें पहनकर खड़ी हो जाएँ
पर वे पहाड़ की ऊँचाई का
मुकाबला कैसे करेंगी। [4]

 ISSN 0975-735X

भूमंडलीकरण के दौर में पर्यावरण पीछे छूट गया। पीछे छूट गए जंगल, गाँव, खेत, आम के पेड़, गाँव का तालाब, नीम की छाँव, पपीहे का गान। शहरों में सिर्फ ईट-पत्थरों के, कंकरीट की बहुमंजिली इमारतें दिखती हैं। गाँव जैसा शहरों में कुछ नहीं दिखता। हर तरफ बंगले हैं, सड़कें हैं, बस्तियाँ हैं, चौराहे हैं। शहरों में पेड़ भी हैं तो सब एक जैसे। गाँवों जैसे अलग-अलग पेड़ कहाँ। गाँवों में तो भाँति-भाँति के पेड़ दिखाई देते हैं–

सागवान, महुआ, करंज!
और वह 'अजाणिया'
अजाणिया यानी अज्ञात![5]

बरसों शहर में रहने के बाद जब गाँव जाएँ, तो कुछ पेड़ तो पहचान में आते हैं और कुछ अज्ञात रह जाते हैं। गाँवों में आज भी पेड़ों की गंध को महसूस किया जा सकता है। बरसात में भीगने पर पेड़ों की महक को, उनकी तासीर को भीतर तक महसूस करते हैं। शहरों में अव्वल तो पेड़ होते नहीं और कहीं एका-दूका दिख भी जाएँ तो नीम आदि ही अधिक दिखते हैं। गाँवों में भी पलायन की प्रवृत्ति बढ़ी है। वह पीढ़ी अब वहाँ भी नहीं बची जो सभी पेड़ों को पहचानती थी। इसलिए जब कोई शहरी बरसों बाद गाँव जाता है तो पूछता है–

अपना चश्मा ठीक करते हुए
बिरजू, यह लंबा-सा पेड़
कौनसा है ?
और बिरजू कब तक
कहता रहेगा–'साहब जी
यह वही पेड़ है–
अजाणिया![6]

भगवतीलाल व्यास जी की कविता में स्त्री विमर्श भी दिखाई देता है। वे स्त्री के लिए बनाई गई परंपरागत सोच से भिन्न सोचते हैं। अधिकांशतः यह मान लिया जाता है कि स्त्री की दुनिया पति-बच्चे, मायका-ससुराल, बरतन-रसोईघर तक ही है। महाभारतकाल से साड़ी में लिपटी हुई 'स्त्री' की ही छवि बनी है किंतु आज के परिप्रेक्ष्य में देखें तो स्त्री ने अपनी छवि को बहुत बदल दिया है। अब ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहाँ स्त्री न हो। वह अपना परचम हर क्षेत्र में फैला रही है। फिर चाहे वह सरकारी पद हो या प्राइवेट, उसने अपनी उपस्थिति हर तरफ दर्ज कराई है। बड़ी-बड़ी कंपनियों की कमान उसके हाथ में है। सागर से आकाश तक उसकी पहुँच हुई है। अब वह चुपचाप किसी कोने में पड़ी रहने वाली नहीं, बल्कि–

हुआ करती होगी
स्त्री कभी
मात्र निर्वाह
मगर अब वह प्रवाह है
कभी मौन कभी मुखर
कभी मंथर कभी उद्दाम।[7]

स्त्री ने आत्मनिर्भर होकर अपने-आपको सशक्त बनाया है। स्वयं को पहचानकर अपनी

स्थिति को पितृसत्तात्मक समाज में बेहतर किया है। व्यास जी की कविताओं के विषय भिन्न-भिन्न हैं। कभी वे प्रकृति, पहाड़ पर बात करते हैं कभी स्त्री की बदलती स्थिति पर। कभी वे लेखक को, तो कभी उसकी कलम को ही अपनी कविता का विषय बनाते हैं। वे कहते हैं एक लेखक के लिए कलम ही उसका हथियार होता है। यह बात हम लोग बहुत बार सुनते रहे हैं। लेखकों के समुदाय में यह बहुत आम है। लेखक स्वयं भी एक-दूसरे को ऐसा कहते सुने जा सकते हैं किंतु यह सच कितना है यह शोध का विषय हो सकता है। लेखक तो हजारों हैं, पर अपनी-अपनी कलम को क्या धारदार सब बना पाते हैं? या कि सिर्फ कलम का प्रयोग प्रार्थना पत्र लिखने में करते हैं। भगवतीलाल व्यास का पूछना सही है–

क्या सचमुच हम/ कलम से
काम लेते हैं/ हथियार का
या फिर/ प्रार्थना-पत्र ही
लिखते रहते हैं/ उससे/ उम्र-भर?[8]

प्रार्थना पत्र कहने के पीछे कितना तीखा व्यंग्य है। बहुत कम ही ऐसे लेखक हैं जो अपनी कलम को हथियार बनाकर क्रांति लाने का, समाज में परिवर्तन लाने का काम करते हैं। समाज की सड़ी-गली परंपराओं को ताने-बाने में सुधार लाने का प्रयास कलम से होना चाहिए। लेखक ही अपनी कलम से परिवर्तन ला सकता है।

किसी भी व्यक्ति के लिए उसका काम उसकी पहचान होता है। अपनी इस पहचान को बनाने में बरसों लग जाते हैं। किसी भी क्षेत्र विशेष में पहचान बनाना कठिन और चुनौती-भरा काम है। ऐसे ही लेखन का क्षेत्र भी चुनौतीपूर्ण है। व्यक्ति सतत लिखकर बल्कि अच्छा और आनंदपूर्ण लिखकर अपनी पहचान बनाता है। शब्दों के चुनाव से सफल रचना करता है, परंतु फिर कभी-कभी वह स्वयं से कहता है–

अक्षरों का बोझ/ ढोते-ढोते थक गया हूँ
यहाँ से वहाँ/ लाते-ले जाते
छिल गए हैं मेरे कंधे/ भाँत-भाँत के अक्षर
गोल-मटोल/ सीधे-सपाट।[9]

अक्षर के साथ-साथ चलते हुए लेखक को उनके साथ रहने और उनके साथ जीने की आदत हो जाती है। फिर वह सोचता है कि अगर अक्षरों को बीच सफर में छोड़ दूँ तो मेरी पहचान क्या रहेगी? अक्षरों के खोने के साथ ही मेरी पहचान भी खो जाएगी। इनके बिना मेरा अस्तित्व ही क्या? लेखक घबरा जाता है बिना अक्षरों को वह कहता है–

अक्षर बेहद जरूरी है/ मेरे लिए
इस सफर में/ अगले सफर में...और
हर सफर में/ अक्षर तो फूल होते हैं
फूलों का बोझ/ किसे अखर सकता है।[10]

भगवतीलाल व्यास अपनी कविताओं में सकारात्मक सोच को महत्त्व देते हैं। वे मानते हैं कि व्यक्ति को अच्छा और बुरा दोनों ही करने का अवसर मिलता है। तय उसे ही करना होता है कि क्या करे, किस मार्ग पर चले–

ISSN 0975-735X

कितना अच्छा होता कि
तुम्हारी हाथ में कटार की जगह
कंदील होती।[11]

कटार और कंदील दोनों ही काटने का काम करती हैं। एक आदमी को काट देती है तो दूसरी अँधेरे को। ये अब हमें ही तय करना है कि जीवन में किस राह पर चलना है। अँधेरा-उजाला, बुराई-अच्छाई साथ-साथ चलते हैं। जीवन इन दोनों पक्षों के संघर्ष की ही परिणति है। जीवन को सफल बनाने के लिए जरूरी है आशावान होना।

व्यास जी जीवन के प्रति आशावान हैं। वे अपनी कविताओं के माध्यम से जीवन के कटु सत्यों को सादगी से कहते हैं। वे कविता के माध्यम से वर्तमान राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्था और व्यावसायीकरण के प्रति अंसतोष व्यक्त करते हैं। उनकी कविता जीवन के अनवरत सफर में आश्वस्त करती है, सुकून देती है। सही मायने में यही कविता है।

संदर्भ

1. डॉ॰ भगवतीलाल व्यास, शब्दों की धरती है कविता, अनुरोध, बोधि प्रकाशन, 2012, पृ॰ 13
2. वही, पृ॰ 13
3. वही, नहीं होंगे पहाड़, पृ॰ 69
4. वही, पृ॰ 69
5. वही, अजाणिया, पृ॰ 23-24
6. वही, पृ॰ 23-24
7. वही, स्त्री, पृ॰ 28
8. वही, उपहार, पृ॰ 121
9. वही, अक्षर, पृ॰ 43
10. वही, अक्षर, पृ॰ 43
11. वही, अँधेरा, पृ॰ 91

डी-502, आर्चीज पीस पार्क
सेक्टर-4, बीएसएनएल वाली रोड
न्यू विद्यानगर, उदयपुर 313002
मो॰ 9413864055
ईमेल : neetuparihar11@gmail.com